IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन मे भारत की भूमिका

शोधार्थी विरेन्द्र सिंह

राजनीति विज्ञान विभाग एवं लोक प्रशासन विभाग

बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, रोहतक

सारांशः गुट–निरपेक्ष आन्दोलन राष्ट्रों की एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है। जिन्होनें निश्चिय किया है कि विश्व के किसी भी पावर ब्लॉक के संग या विरोध में नहीं रहेगें। यह आन्दोलन भारत के प्रधानमंत्री 'पंडित जवाहर लाल नेहरू' मिस्त्र के पूर्व राष्ट्रपति 'गमाल अब्दुल नासिर' व युगोस्लाविया के राष्ट्रपति 'टीटो', इंड़ोनेशिया के राष्ट्रपति 'डॉ. सुक्रणें' व घाना के ' क्वामें एन्क्रूमा' का आरम्भ किया हुआ है। गुट–निरपेक्ष आन्दोलन की स्थापना 'अप्रैल 1961' में हुई थी और 2012 तक उसमें '120' सदस्य हो चुके थे। इस संगठन का उद्येश्य गुट–निरपेक्ष राष्ट्रों की राष्ट्रीय स्वतन्त्रता, सार्वभौमिक क्षेत्रीयता, एकता एंव सुरक्षा को उनके साम्राज्यवाद औपनिवेशवाद, जातिवाद 'रंगभेद' एंव विदेशी आक्रमण, सैन्य अधिकरण, 'हस्तक्षेप' आदि मामलों के विरूद्ध उनके युद्ध के दौरान सुनिश्चित करना है। उसके साथ ही किसी प्रकार पावर ब्लॉक के पक्ष या विरोध में ना होकर निष्पक्ष रहना है। ये संगठन 'सयुक्त राष्ट्र के कुल सदस्यों की संख्या का लगभग 2/3 एवं विश्व की कुल जनसंख्या 55 प्रतिशत भाग का प्रतिनिधित्व करता है। खासकर उसमें तृतीय विश्व यानि विकासशील देश है। गुट–निरपेक्ष आन्दोलन में भारत की अहम भूमिका क्योंकि भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतान्त्रीक देश है। शीत युद्ध के समय भारत गुट–निरपेक्षता के माध्यम विश्व शांति कायम करने में अपनी अहम भूमिका निभाई। गुट–निरपेक्षता कोई तटस्थता नहीं है। यह विश्व युद्धों से बचाने से के लिए और उस समय जब गुट–निरपेक्ष की स्थापना की गई क्योंकि उस समय नवीन स्वतन्त्र राष्ट्र अपना एक अलग वजूद स्थापित करना चाहते थे।

मुख्य शब्दः अन्तर्राष्ट्रीय, सार्वभौमिक, क्षेत्रीयता, साम्राज्यवाद, औपनिवेशवाद, जातिवाद, रंगभेद

भारत की विदेश नीति के रूप में गुटनिरपेक्षता:

भारत के सन्दर्भ में गुट–निरपेक्षता की विदेश नीति को समग्र मानवता के हितों की आकंक्षा से प्रारम्भ किया गया गुट–निरपेक्ष आन्दोलन इसी पृष्ठभूमि में समझा जाना चाहिए कि यह मात्र तटस्थता नहीं है और समयानुसार इस आन्दोलन का सरोकार और स्वरूप बदलता रहा है। यह भारत की विदेश नीति का महत्वपूर्ण व केन्द्र बिन्दू है। भारत की विदेश नीति सिद्धांतों को अपनाने के दो प्रमुख स्त्रोत है। भौतिक और गैर भौतिक। भौतिक तत्वों में भारत की भू राजनीतिक स्थिति तथ आर्थिक स्थिति महत्वपूर्ण रही है। गैर भौतिक तत्वों में भारत की ऐतिहासिक विरासत एवं भारतीय दर्शन एवं परम्पराओं का प्रभाव अप्पा दो राज एंव एम.एस. राजन के अनुसार भारत ने इस सिद्धांत को निम्न तीन कारणों से अपनाया:–

1. भारत की परम्परा, सहनशीलता और बहुमूल्य विचारधारा
2. भारत की भौगोलिक स्थिति।
3. नव स्वतन्त्र राष्ट्रों द्वारा अपनी रक्षा हेतू।

गुट निरपेक्षता की नीति के कई पहलू है। परन्तु सामान्य रूप से इसे शीतयुद्ध व उससे सम्बन्ध गुटबन्दियों से अलग रहने की नीति माना गया है। इसे दूसरे शब्दों में उसे शीत युद्ध से सम्बन्ध सैनिक गठबन्धनों में भागीदारी न करने वाला सिद्धांत भी माना गया। इसके अतिरिक्त इसे भारत का अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में स्वतन्त्र दृष्टिकोण अपनाने वाला सिद्धांत भी माना जाता है। इस सिद्धांत के द्वारा भारत अपने विकल्पों की स्वतन्त्रता के साथ अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति तथा मुददों की योग्यता के आधार पर समर्थन करना चाहता था। इसलिए गुट–निरपेक्षता का सिद्धांत एक गव्यात्मक विदेशनीति है। जिसमें सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही पहलू विद्यामान हैं। इसके नकारात्मक पहलू है।

विश्व शक्ति गुटों व शीत युद्ध से अलग रहाना।

सैन्य गठबन्धनों में शामिल न होना।

इसके सकारात्मक पहलू है:–

:विश्व शांति हेतू कार्य करना।

:विश्व में स्वतन्त्रता के प्रसार को बढाना।

:उप–निवेशवाद की समाप्ति एवं स्वतन्त्र राष्ट्रों के उद्य का समर्थन करना।

:राष्ट्रों के मध्य सहयोग के दायरे मे विकास करना।

इस प्रकार स्पष्ट है कि भारत का गुट–निरपेक्षता से क्या अभिप्राय रहा है। परन्तू इसके सही अर्थ को लेकर विशषज्ञों में मतभेद है। शायद इसलिए कई लेखक इसे अलगावाद गैर सम्बद्धता, तटस्थता, एकलवाद, आदि धारणओं से जोड़ते है।

परन्तू जवाहरलाल नेहरू ने इन धारणाओं को गुट–निरपेक्षता की नीति के समक्ष मानने को गलत ठहराया है। जहां तक तटस्थीकरण का प्रश्न है। नेहरू का मानना था कि यह धारणा सीमित है। तथा आज के सन्दर्भ में विश्व युद्धों से तटस्थ रहना संभव नहीं है। इसके विपरीत गुट–निरपेक्ष देश को युद्ध में भी हिस्सा लेना पड़ सकता है। यदि वह इसके राष्ट्रीय हितों के अनुरूप है। इसलिए जहां स्वतन्त्रता न्याय अथवा युद्ध होगें वहां भारत तटस्थ नहीं रह सकता एक साक्षात्कार में नेहरू ने स्वीकार किया था कि साधारण रूप से भारत की गुट–निरपेक्षता से अर्थ है कि हम प्रत्येक विषय को उस समय की परिस्थितियों के संदर्भ में योग्यता के अनुसार ऑकते है। तथा विश्व शांति व अन्य उद्देश्यों के संदर्भ में जो उचित हो वह निर्णय लेते है। इस प्रकार गुट–निरपेक्षता व अलगावाद का भी नेहरू ने खण्डन किया। नेहरू का मानना था कि आज के विश्व में अलगावाद संभव नहीं है। शक्ति गुटों में हिस्सा न लेना तथा गठबन्धनों से अलग रहना अलगावाद नहीं है। इसके विपरीत इस नीति में आधार पर हम शान्ति के पक्ष में सही निर्णय लेने में सक्षम होगें तथा आर्थिक व अन्य क्षेत्रों में परस्पर सहयोग बढ़ा सकेगें। इस आपसी सहयोग के आधार पर ही हम अपने विदेश नीति के प्रमुख उद्देश्य 'एक विश्व' की धारणा को साकार कर पायेगें। पण्डित नेहरू इस नीति को तीसरी शक्ति से विरोधी गुटों के माध्य सन्तुलन करने वाली तीसरी शक्ति से नहीं था। भारत द्वारा दो गुटों के बीच दीवार या तीसरी शक्ति के रूप में कार्य करना गुट–निरपेक्षता का लक्ष्य नहीं था।

वास्तविकता यह थी कि भारत इन शक्ति गुटों को समाप्त करके आपसी सहयोग के आधार पर सभी राष्ट्रों द्वारा समानता के आधार पर विकास का पक्षधर रहा है। स्पष्ट है कि इस नीति के अनेक पहलू है जो इसके सकारात्मक व नकारात्मक स्वरूप को उजागर करते है। लेकिन यह अकर्मण्यता की नीति नहीं है। बल्कि यह एक गतिशील नीति है जो बललते हूए अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप के साथ अपने आप को ढालने में सक्षम है। इसके अनुसरण से भारत को दो प्रमुख उद्देश्यों की प्राप्ति में सफलता मिलती है। एक और इसके द्वारा भारत अपने राष्ट्रीय हितों व सुरक्षा की प्राप्ति करता है। व दूसरी और वह भारत की विश्व शन्ति की परम्परा को आगे बढ़ाती है। क्योंकि बाकी सभी नीतियां संघर्ष, शीतयुद्ध, विश्वयुद्ध की घोतक है। यही एक मात्र शान्ति की नीति है। जिसके द्वारा भारतीय राष्ट्रीय उददेश्यों की पूर्ति हो सकती है।

स्पष्टतः स्वीकार किया जा सकता है कि नेहरू इस नीति को व्यापक सन्दर्भ में शान्ति की नीति मानते थे। जो न केवल भारत बल्कि एशिया और अन्ततः विश्व शान्ति की नीति मानते थे।

इस प्रकार हम देखे तो भारत की इस विदेश नीति को एक नीति से एक आन्दोलन बनने की प्रक्रिया में 15 वर्ष लेगे। 1961 में बेलग्रेड में अपने प्रथम शिखर सम्मेलन में 25 राष्ट्रों की भागीदारी

से यह आन्दोलन आरम्भ हुआ था। तथा 5–6 सितम्बर 2011 में बेलग्रेड में ही अपने 50 वर्ष पूरे होने पर इसकी स्वर्ण जयन्ती मनाई गई । इसका मूल उद्देश्य तीसरी दुनिया के देशों को सैन्य गठबन्धनों में शामिल होने से बचाने के साथ स्वतन्त्र विदेश नीति की प्रेरणा देना रहा। इससे इनकार नहीं किया जा सकता कि तीसरी दुनिया के देशों में इसकी विश्वसनीयता लगातार बढ़ती गई और यह विकासशील देशों का एक महत्वपूर्ण आन्दोलन बन गया। इसने इन देशों के प्रमुख मुद्दों को विश्व मंच पर उभरा व उनके लिए संघर्ष किया इस आन्दोलन की बढ़ती साख इसकी प्रसिद्धि का अनुमान इसकी बढ़ती सदस्य संख्या एवं पर्यवेक्षकों व अतिथियों की सम्मेलनों में भागीदारी से लगाया जा सकता है।

जिसका विवरण निम्न तालिका में हैं:–

क्र0 स0	शिखर सम्मेलन	स्थान	वर्ष	सदस्य संख्या
1	पहला	बेलग्रेड	1–6 सितम्बर 1961	25
2	दूसरा	काहिरा	5–10 सितम्बर 1964	47
3	तीसरा	लुसाका	8–10 सितम्बर 1970	53
4	चौथा	अल्जीयर्स	5–09 सितम्बर 1973	75
5	पाँचवा	कोलम्बो	16–19 सितम्बर 1976	85
6	छठा	हवाना	3–09 सितम्बर 1979	92
7	सांतवा	नई दिल्ली	7–12 मार्च 1983	100
8	आँठवां	हरारे	1–06 सितम्बर 1986	101
9	नोवां	बेलग्रेड़	4–07 सितम्बर 1989	102
10	दसवां	जकार्ता	01–07 सितम्बर 1992	108
11	ग्यारवां	कार्टा जेना	18–20 अक्टूबर 1995	113
12	बारहवां	डर्बन	02–03 सितम्बर 1998	114
13	तेहरवां	क्वालालम्पुर	20–25 फरवरी 2003	116
14	चौदहवां	हवाना	11–16 जुलाई 2006	118
15	पंद्रहवां	शर्मअलशेख	11–16 जुलाई 2009	118
16	सोलहवां	तेहरान	26–31 अगस्त 2012	120
17	सत्रहवां	वेनेजुएला	13–18 सितम्बर 2016	120
18	अठरवां	अजरबैजान	25–26 अक्टूबर 2019	120
19	उन्नीसवां	यूगांड़ा	19–20 जनवरी 2024	120

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि गुट–निरपेक्षता की नीति भारत द्वारा अपने लिए अपनाई गई जो बाद में तीसरी दुनिया का एक सशक्त आन्दोलन बन गईं जिसमें तीसरी दुनिया के बहुमत के साथ–साथ सयुक्त राष्ट्र संघ, विकसित राष्ट्र भी पर्यवेक्षकों तथा अतिथियों के रूप में जुड गए। अतंतः भारत इस आंदोलन के माध्यम से वैश्विक शान्ति स्थापित करने के प्रयास करता रहा है। इसलिए हमारे लिए यह जरूरी हो जाता है कि गुट निरपेक्षता की प्रकृति को अच्छी तरह समझाना जरूरी हैः–

* गुट निरपेक्ष के अर्थ को लेकर भिन्न–भिन्न परिभाषाएं प्रचलित है।लेकिन इस आंदोलन पर कितना भी विवाद क्यों न रहा हो दुनिया का 2/3 भाग इसे अपने हितों से जुड़ा आंदोलन मानता हैं। गुट निरपेक्ष आन्दोलन का मुख्य ध्येय तीसरी दुनिया के देशो की आजादी एवं स्वतंत्रता के साथ–साथ वैश्विक शान्ति करने का प्रयास किया। इससे जुड़े देशो की प्रकृति अलग–अलग है इसमें पश्चिम के देशो के साथ–साथ साम्यावादी विचारधारा के देश भी शामिल है लेकिन जब तीसरी दुनिया के हितो की बात हो तो सब एकमत हो जाते हैं।

निष्कर्षः शीत युद्ध के बाद गुट निरपेक्षता के समर्थको एवं बाह्य शक्तियों में इसकी सार्थकता को लेकर प्रश्न चिन्ह लगा। किन्तु अभी इसका विघटन नहीं हुआ हैं। इस सन्दर्भ में इनकार नहीं किया जा सकता वर्तमान सन्दर्भ में गुट निरपेक्ष एक देश की नीति तथा एक आन्दोलन में अवश्य कुछ द्वन्द्ध सा आ गया हैं। इसलिए इसकों एक देश की विदेशनीति के रूप में महत्व को नहीं नकारा जा सकता चाहे सामूहिक रूप से इसकी सार्थकता हो या ना हो। तीसरी दुनिया कें लिए आदर्श की भुमिका निभाई। 1970 के दशक में नवीन आर्थिक विश्व व्यवस्था पर बल दिया गया । इस प्रकार स्पष्ट है कि इस आन्दोलन का स्वरूप और उद्देश्य समय के अनुसार बदलते रहे हैं। शरूआत में इस आन्दोलन को शीत युद्ध के विरोध स्वरूप माना गया और इसका जुड़ाव राजनीतिक मुद्दों से अधिक रहा। लेकिन कुछ समय बाद इसका सम्बन्ध आर्थिक क्रियाओं व विकास से सम्बन्धित हो गया। वर्तमान में गुट निरपेक्ष आन्दोलन के मुख्य मुद्दे हैं, जैसे– जलवायु परिवर्तन,वैश्विक आर्थिक मंदी,अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार,खाद्य सुरक्षा,वैश्विक आंतकवाद जैसे मुद्दों को लेकर गुट निरपेक्ष देश सामूहिक रूप से विचार विमर्श करते हैं। तथा विकसित देशो के समक्ष अपना मत प्रस्तुत करतें हैं। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा की गुट निरपेक्ष की प्राथमिकता को बदलने की जरूरत है न कि इसे समाप्त करने की। इसलिए यह मानना उचित होगा कि जब तक तीसरी दुनिया के देशों की मूलभूत समस्या बनी रहेगी इसका महत्व भी बना रहेगा। भारत की विदेशनीति का निर्धारण करने वाले मूल कारकों में गुट निरपेक्ष आंदोलन की भूमिका स्पष्ट हैं। गुट निरपेक्षता की नीति को स्वीकार करने में बाह्य तथा घरेलू परिवेश का जो प्रभाव रहा उसको समझने की दृष्टि से प्रस्तुत शोध अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। बड़ी शक्तियों के साथ भारत के तत्कालीन और वर्तमान के सम्बन्धों में आये परिवर्तनों को समझनें की दृष्टि से यह अध्ययन उपयोगी व महत्वपूर्ण हैं। अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था में गुट

निरपेक्षता के सिद्दान्त व आयाम तथा इससे सम्बन्धित विचारों को वर्तमान में ठीक से स्थापित करने हेतू यह अध्ययन आवश्यक हैं। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति व विदेश नीति में इसका महत्वपूर्ण योगदान हैं।

सन्दर्भः

1. ब्रेचर, 'स्पेशैफिक सोर्सेज ऑफ इण्डियन न्यूट्रलिज्म' के पी मिश्रा सम्पादक फोरेन पॉलिसी ऑफ इण्डिया नई दिल्ली 1977 पृ0 सं0 50–54
2. दो राय अप्पा एव राजनं एम एस, 'इण्डियन फोरेन पॉलिसी एण्ड रिलेशन नई दिल्ली 1985 पृ0 सं0 24
3. यादव आर एस, 'भारत की विदेश नीति,' पीयर्सन दिल्ली 2013 पृ0 सं0 18
4. श्वजर बर्जन, 'पावर पॉलिसी' अ स्टडी ऑफ इन्टरनेशनल सोसायटी', न्यूयार्क 1951 पृ0 सं0 20
5. द न्यूयार्क टाईम्स, 18 अक्टूबर 1989, पृ0 सं0 18
6. टाक्स विद नेहरू पृ0 सं0 46–47
7. अली मजरूह,' द नॉन अलाईमेन्ट मूवमेन्ट,' लन्दन 1978 पृ0 सं0 13